अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : चतुर्थ - जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 06 जनवरी, 2019)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

सावधान

1. परीक्षा में नकल नहीं करें। 2. प्रामाणिकता से परीक्षा देकर ईमानदारी का परिचय दे। 3. मायावी नहीं मेधावी बनें। 4. नकल से नहीं अकल से काम लें।

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
5. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	6	कुल योग
प्राप्तांक							
पूर्णांक	10	10	10	10	24	36	100
पुनः जाँच							

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 10x1 = (10)

(a) साधु के लिए मेहमानों को आगे पीछे करे तो दोष हैं-

(क) परियट्टिए (ख) पाहुडियाए

(ग) अणिसिट्ठे (घ) पाओअर ( )

(b) दूसरों को हानि पहुँचाने का मानसिक प्रयत्न करना कहलाता है-

(क) आरम्भ (ख) संरंभ

(ग) समारंभ (घ) इनमें से कोई नहीं ( )

(c) पाँच समिति गुप्ति का थोकड़ा किस सूत्र से लिया गया है-

(क) उत्तराध्ययन सूत्र (ख) दशवैकालिक सूत्र

(ग) नन्दी सूत्र (घ) पन्नवण्णा सूत्र ( )

(d) 42 दोष टालकर आहार पानी लेने की प्रवृति है-

(क) ईर्या समिति (ख) भाषा समिति

(ग) एषणा समिति (घ) इनमें से कोई नहीं ( )

(e) चारित्राचारित्र लब्धि के अलद्धिया में कितने ज्ञान व अज्ञान की भजना होती है-

(क) 4 ज्ञान 3 अज्ञान (ख) 5 ज्ञान 3 अज्ञान

(ग) 3 ज्ञान 3 अज्ञान (घ) 2 ज्ञान 2 अज्ञान ( )

(f) शुक्ल लेशी में कितने ज्ञान व अज्ञान की भजना होती है-

(क) 5 ज्ञान 3 अज्ञान (ख) 4 ज्ञान 3 अज्ञान

(ग) 4 ज्ञान 2 अज्ञान (घ) 5 ज्ञान 2 अज्ञान ( )

(g) समुच्चय पर्याप्त में गुणस्थान होते हैं-

(क) 7 (ख) 12

(ग) 14 (घ) 9 ( )

(h) तिर्यञ्च अपर्याप्त में उपयोग होते हैं-

(क) 10 (ख) 8

(ग) 4 (घ) 6 ( )

(i) नरदेव की आगति है-

(क) 48 (ख) 82

(ग) 284 (घ) 275 ( )

(j) भाव देव की अवगाहना पर्याप्त अवस्था में होती है-

(क) जघन्य 7 हाथ उत्कृष्ट 500 धनुष (ख) जघन्य 2 हाथ उत्कृष्ट 500 धनुष

(ग) जघन्य 1 हाथ उत्कृष्ट 7 हाथ (घ) जघन्य 7 धनुष उत्कृष्ट 500 धनुष( )

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 10x1=(10)

(a) निर्बल से सबल जबरदस्ती छीन कर देवें तो अच्छिज्जे दोष लगता है। ( )

(b) सचित्त पानी के हाथ से, भीगे बालों से आहारादि लेवे तो संकिय दोष लगता है। ( )

(c) ज्ञान लब्धि का थोकड़ा उत्तराध्ययन सूत्र से लिया गया है। ( )

(d) मनुष्य गतिक में 3 ज्ञान की भजना 2 अज्ञान की नियमा होती है। ( )

(e) नरक गति के अपर्याप्त जीवों में पहला व चौथा ये दो गुणस्थान ही माने जाते हैं। ( )

(f) तिर्यंच के अपर्याप्त में अवधि ज्ञान होता है। ( )

(g) भवनपति देव भाव देव होते हैं। ( )

(h) धर्मदेव की अवगाहना जघन्य दो हाथ उत्कृष्ट 500 धनुष की होती है। ( )

(i) छोटी गतागत में तिर्यंच के 46 भेद बताए हैं। ( )

(j) नव ग्रैवेयक में जैन साधु के अलावा अन्य साधु भी आते हैं। ( )

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- 10x1=(10)

(a)	साधु के निमित्त खरीद कर देना	(क) केवलज्ञान	.....
(b)	मिश्र वस्तु लेवे तो	(ख) क्रीत दोष	.....
(c)	नो भव सिद्धिया में नियमा	(ग) 16	.....
(d)	पाँच अनुत्तर विमान में नियमा	(घ) 4	.....
(e)	देव अपर्याप्त अनाहारक में योग	(च) 14	.....
(f)	मनुष्य पर्याप्त में गुणस्थान	(छ) 8	.....
(g)	देवाधिदेव की आगति	(ज) 3 ज्ञान की	.....
(h)	भव्य देव की गति	(झ) उन्मिश्र दोष	.....
(i)	चौथी नारक की आगति	(य) 38	.....
(j)	भवनपति, वाणव्यन्तर में आगति	(र) 198	.....

प्र.4 मुझे पहचानो :- 10x1=(10)

(a) मैं जिह्वा के स्वाद के लिए अधिक आहार करने वाला साधु को आहार करते समय लगने वाला दोष हूँ। .....

(b) मैं निरवद्य वचन बोलने की सम्यक् प्रवृत्ति हूँ। .....

(c) मैं उपधि का एक ऐसा भेद हूँ, जो साधु गृहस्थ से लेकर हमेशा पास रखते हैं। .....

(d) मेरे लद्धिया में 5 ज्ञान की भजना और अलद्धिया में 5 ज्ञान, तीन अज्ञान की भजना होती है। .....

(e) मुझमें अपर्याप्त अवस्था में विभंग ज्ञान नहीं होता है। .....

(f) मैं 34 अतिशयों से युक्त होता हूँ। .....

(g) मेरा वर्णन भगवती सूत्र के 12वें शतक के नवमें उद्देशक में आता है। .....

(h) मेरी आगति 11 की तथा गति 6 की है। .....

(i) मैं अपर्याप्त अवस्था में ही होता हूँ। .....

(j) मेरी आगति 49 की होती है। .....

प्र.5 एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- **12x2 = (24)**

(a) जीभ की लोलुपता के लिए साधु को लगने वाले वनीपक दोष का अर्थ लिखिए।

.....

.....

.....

(b) औपग्रहिक उपधि को परिभाषित कीजिए।

.....

.....

.....

(c) साधु के आहार त्यागने के कोई दो कारण अर्थ सहित लिखिए।

.....

.....

.....

(d) काय गुप्ति को परिभाषित कीजिए।

.....

.....

.....

(e) 'संजोयणा' का अर्थ लिखिए।

.....

.....

.....

(f) लब्धि द्वार के पहले 5 भेद लिखिए।

.....

.....

.....

(g) आहारक, अनाहारक में ज्ञान-अज्ञान की भजना लिखिए।

.....

.....

.....

(h) ज्ञान के पर्याय की अल्पबहुत्व लिखिए।

.....

.....

.....

(i) समुच्चय अपर्याप्त में मिलने वाले पाँच योग के नाम लिखिए।

.....

.....

.....

(j) देव कितने प्रकार के होते हैं ? उनके नाम लिखिए।

.....

.....

.....

(k) पाँच देवों का अल्पबहुत्व द्वार लिखिए।

.....

.....

.....

(l) पाँच देवों की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति लिखिए।

.....

.....

.....

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार वाक्यों में लिखिए : - 12x3=(36)

(a) देने वाले दाता के निमित्त से लगने वाले उद्‌गम के 16 दोषों के नाम लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(b) साधु के आहार करने के 6 कारण लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(c) दस प्रकार की स्थण्डिल भूमि के प्रथम तीन प्रकार लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(d) ज्ञान लब्धि का लेश्या द्वार लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(e) ज्ञान लब्धि के थोकड़े में निम्न की नियमा व भजना लिखिए-

1. सन्नी मनुष्य के अपर्याप्त
2. तीन विकलेन्द्रिय
3. मतिश्रुत ज्ञान के लद्धिया, अलद्धिया
4. असन्नी में

.....

.....

.....

.....

.....

(f) ज्ञान लब्धि का भवत्थ (भवस्थ) द्वार लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(g) चारों गति के पर्याप्त आहारक में गुणस्थान, योग, उपयोग, लेश्या की संख्या लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(h) समुच्चय जीव में, समुच्चय अपर्याप्त में, समुच्चय पर्याप्त में, समुच्चय अपर्याप्त अनाहारक में जीव के भेद, गुणस्थान व योग लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(i) अवधिज्ञान के 6 भेद लिखिए तथा इनके द्रव्य, क्षेत्र से जानने देखने का विवरण लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(j) पाँच देव के थोकड़े के अनुसार 'वैक्रिय द्वार' लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(k) पाँच देव के थोकड़े के अनुसार धर्मदेव, देवाधिदेव की आगति लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(l) छोटी गतागत के अनुसार भवनपति, वाणव्यन्तर देवों की गति-आगति लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....